दशवैकालिकसूत्र (फोल्डर नंबर ००१२४०)

मुख्य टाइटल

समर्पण ---५
प्रकाशकीय---७
श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर--८
सम्पादकीय--९
प्रस्तावना -- १८
विषयानुक्रम --- ७७
दशवैकालिकसूत्र – परिचय --३
प्रथम अध्ययन-द्रुमपुष्पिका
प्राथमिक --६
मंगलाचरण ---८
श्रमणधर्म-भिक्षाचरी और मधुकर-वृत्ति --- १७
श्रमणधर्म-पालक भिक्षाजीवी साधुओं के गुण -- २३
द्वितीय अध्ययन-श्रामण्यपूर्वक
प्राथमिक -- २५
कामनिवारण के अभाव में श्रामण्यपालन असंभव-- २७
अत्यागी और त्यागी का लक्षण --- ३२
काम-भोग निवारण के उपाय --- ३५
काम-पराजित रथनेमि को संयम में स्थिरता क राजीमती का उपदेश --------------------------------३९
राजीमती के सुभाषित का परिणाम -- ४४
समस्त साधकों के लिये प्रेरणा-- ४४
तृतीय अध्ययन-क्षुल्लकाचार-कथा
प्राथमिक -- ४७
निर्ग्रन्थ महर्षियों के लिये अनाचीर्ण -- ५३
अनाचीर्णों के नाम --- ५५
निर्ग्रन्थों के लिये पूर्वोक्त अनाचीर्ण अनाचरणीय -- ६९
निर्ग्रन्थों का विशिष्ट आचार-- ७०
शुद्ध श्रमणाचार-पालन का फल -- ७३
चतुर्थ अध्ययन-षड्जीवनिका
प्राथमिक -- ७६
षड्जीवनिकाय-नाम, स्वरूप और प्रकार -- ७९
षड्जीवनिकाय पर अश्रद्धा-श्रद्धा के परिणाम-- ९३
दण्डसमारम्भ के त्याग का उपदेश और शिष्य द्वारा स्वीकार -- ९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिष्य द्वारा सरात्रिभोजनविरमण पंच महाव्रतों का स्वीकार--१००
अहिंसा महाव्रत के संदर्भ में –षट्काय-विराधना से विरति--११४
अयतना से पापकर्म का बन्ध और यतना से अबन्ध--१२५
जीवादि तत्त्वों के ज्ञान का महत्त्व--१३१
आत्मशुद्धि द्वारा विकास का आरोहक्रम--१३६
सुगति की दुर्लभता और सुलभता--१४२
षड्जीवनिकाय-विराधना न करने का उपदेश--१४५
पंचम अध्ययन-पिण्डैषणा
प्राथमिक--१४६
गोचरी (भिक्षाचर्या) के लिये गमनविधि--१५०
ब्रह्मचर्य व्रत रक्षार्थ-वेश्यालयादि के निकट से गमन-निषेध--१५६
भिक्षाचर्या के समय शरीरादि चेष्टा-विवेक--१५८
गृह-प्रवेश-विधि-निषेध--१६१
आहार-ग्रहण-विधि-निषेध--१६८
अनिसृष्ट-आहार-ग्रहणनिषेध और निःसृष्ट ग्रहणविधान--१७६
गर्भवती एवं स्तनपायिनी नारी से भोजन लेने का निषेध-विधान--१७७
शंकित और उद्भइन्न दोषयुक्त आहार-ग्रहणनिषेध--१८०
दानार्थ-प्रकृत आदि आहार-ग्रहण का निषेध--१८१
औद्देशिकादि दोषयुक्त आहार-ग्रहणनिषेध--१८३
वनस्पति-जल-अग्नि पर निक्षिप्त आहार-ग्रहणनिषेध--१८४
अस्थिर शिलादि-संक्रमण करके गमन-निषेध और कारण--१८९
मालापहृत दोषयुक्त आहार अग्राह्य--१९०
आमक वनस्पति ग्रहण-निषेध--१९१
सचित्तरज से लिप्त वस्तु भी अग्राह्य--१९१
बहु-उज्झितधर्मा फल आदि के ग्रहण का निषेध--१९२
पान-ग्रहण-निषेध-विधान--१९४
भोजन करने की आपवादिक विधि--१९६
साधु-साध्वियों के आहार करने की सामान्य विधि--१९९
मुधादायी और मुधाजीवी की दुर्लभता और दोनों की सुगति--२०५
पात्र में गृहीत समग्र भोजन-सेवन का निर्देश--२०६
पर्याप्त आहार न मिलने पर पुनः आहार-गवेषणा-विधि--२०६
यथाकालचर्या करने का विधान--२०७
भिक्षार्थ गमनादि में यतना-निर्देश--२०९
सचित्त, अनिर्वृत्त, आमक एवं अशस्त्र-परिमत के ग्रहण का निषेध--२१२
सामुदानिक भिक्षा का विधान--२१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीनता, स्तुति एवं कोप आदि का निषेध -- २१८
स्वादलोलुप और मायावी साधु की दुर्वृत्ति का चित्रण और दुष्परिणाम ------------------------------- २२१
मद्यपान-स्तैन्यवृद्धि आदि तज्जनित दोष एवं दुष्परिणाम -- २२२
षष्ठ अध्ययन-धर्मार्थकामाध्ययन (महाचार-कथा)
प्राथमिक --- २२९
राजा आदि द्वारा निर्ग्रन्थों के आचार के विषय में जिज्ञासा -- २३१
आचार्य द्वारा निर्ग्रन्थाचार की दुश्चरता और अठारह स्थानों का निरूपण------------------------------ २३३
प्रथम आचारस्थान-अहिंसा --- २३६
द्वितीय आचारस्थान-सत्य (मृषावादविरमण) --- २३७
तृतीय आचारस्थान-अदत्तादान-निषेध (अचौर्य) -- २३८
चतुर्थ आचारस्थान-ब्रह्मचर्य (अब्रह्मचर्य-सेवन-निषेध)--- २३९
पंचम आचारस्थान-अपरिग्रह (सर्वपरिग्रह-विरमण)--- २४१
छठा आचारस्थान-रात्रिभोजन-विरमणव्रत --- २४४
सातवें से बारहवें तक आचारस्थान-षड्जीव-निकाय-संयम --- २४७
तेरहवां आचारस्थान-प्रथम उत्तरगुण अकल्प्य-वर्णन--- २५१
चौदहवां आचारस्थान-गृहस्थ के भोजन में परिभोगनिषेध-- २५३
पन्द्रहवां आचारस्थान-पर्यंक आदि पर सोने-बैठने का निषेध --- २५५
सोलहवां आचारस्थान-गृहनिषद्या-वर्जन-- २५६
सत्तरहवां आचारस्थान-स्नान-वर्जन -- २५८
अठारहवां आचारस्थान-विभूषात्याग --- २५९
आचारनिष्ठा निर्मलता एवं निर्मोहता आदि का सुफल--- २६१
सप्तम अध्ययन-वाक्यशुद्धि
प्राथमिक --- २६४
चार प्रकार की भाषायें और वक्तव्य-अवक्तव्य-निर्देश--- २६६
कालादिविषयक निश्चयकारी भाषा-निषेध --- २६९
सत्य किन्तु पीडाकारी कटोर भाषा का निषेध-- २७१
भाषा संबन्धी अन्य विधि-निषेध--- २७३
पंचेन्द्रिय प्राणियों के विषय में बोलने का निषेध-विधान-- २७५
वृक्षों एवं वनस्पतियों के विषय में अवाच्य एवं वाच्य का निर्देश--- २७७
संखडि एवं नदी के विषय में निषिद्ध तथा विहित वचन -- २८१
परकृत सावद्य व्यापार के सम्बन्ध में सावद्यवचन निषेध -- २८३
असाधु और साधु कहने का निषेध-- २८७
जय-पराजय प्रकृतिप्रकोपादि एवं मिथ्यावाद के प्ररूपण का निषेध------------------------------------- २८७
भाषाशुद्धि का अभ्यास अनिवार्य-- २९०
भाषाशुद्धि की फलश्रुति -- २९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टम अध्ययन-आचार-प्रणिधि
प्राथमिक ---------- २९३
आचार-प्रणिधि की प्राप्ति के पश्चात् कर्तव्य-निर्देश की प्रतिज्ञा ---------- २९५
अष्टविध सूक्ष्म जीवों की यतना का निर्देश---------- २९९
प्रतिलेखन परिष्ठापन एवं सर्वक्रियाओं में यतना का निर्देश---------- ३०१
दृष्ट, श्रुत और अनुभूत के कथन में विवेक-निर्देश ---------- ३०३
रसनेन्द्रिय और कर्णेन्द्रिय के विषयों में समत्वसाधना का निर्देश---------- ३०५
क्षुधा, तृषा आदि परीषहों को समभाव से सहने का उपदेश---------- ३०७
रात्रिभोजन का सर्वथा निषेध ---------- ३०७
क्रोध-लोभ-मान-मद-माया-प्रमादादि का निषेध ---------- ३०८
वीर्याचार की आराधना के विविध पहलू ---------- ३११
कषाय से हानि और इनके त्याग की प्रेरणा ---------- ३१२
रत्नाधिकों के प्रति विनय और तप-संयम में पराक्रम की प्रेरणा ---------- ३१५
प्रमादरहित होकर ज्ञानाचार में संलग्न रहने की प्रेरणा---------- ३१७
गुरु की पर्युपासना करने की विधि---------- ३२०
स्व-पर-अहितकर भाषा-निषेध---------- ३२१
ब्रह्मचर्य गुप्ति के विविध अंगों के पालन का निर्देश ---------- ३२४
प्रव्रज्याकालिक श्रद्धा अन्त तक सुरक्षित रखे ---------- ३२९
आचारप्रणिधि का फल ---------- ३२९
नवम अध्ययन-विनयसमाधि
प्राथमिक ---------- ३३३
प्रथम उद्देशक
अविनीत साधक द्वारा की गई गुरु-आशातना के दुष्परिणाम ---------- ३३६
गुरु (आचार्य) के प्रति विविध रूपों में विनय का प्रयोग---------- ३४०
गुरु (आचार्य) की महिमा---------- ३४२
गुरु की आराधना का निर्देश और फल ---------- ३४३
द्वितीय उद्देशक
वृक्ष की उपमा से विनय के माहात्म्य और फल का निरूपण ---------- ३४६
अविनीत और सुविनीत के दोष-गुण तथा कुफल-सुफल का निरूपण ---------- ३४७
लौकिक विनय की तरह लोकोत्तर विनय की अनिवार्यता ---------- ३४९
गुरुविनय करने की विधि ---------- ३५१
अविनीत और विनीत को सम्पत्ति, मुक्ति आदि की अप्राप्ति एवं प्राप्ति का निरूपण---------- ३५४
तृतीय उद्देशक
विनीत साधक की पूज्यता---------- ३५७
विनीत साधक को क्रमशः मुक्ति की उपलब्धि ---------- ३६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थ उद्देशक
विनयसमाधि और उसके चार स्थान--३६५
विनयसमाधि के चार प्रकार--३६६
श्रुतसमाधि के प्रकार--३६७
आचारसमाधि के चार प्रकार--३७०
चतुर्विध-समाधि-फल-निरूपण--३७१
दशवाँ अध्ययन-स-भिक्षु
सद्भिक्षु-षट्काय रक्षक एवं पंचमहाव्रती आदि सद्गुण सम्पन्न --३७५
सद्भिक्षु-श्रममचर्या में सदा जागरूक--३७७
सद्भिक्षु-आक्रोशादि परीषह-भय-कष्टसहिष्णु--३८१
प्रथम चूलिका-रतिवाक्या
प्राथमिक--३९१
संयम में शिथिल साधक के लिये अठारह आलोचनीय स्थान --३९३
उत्प्रव्रजित के पश्चात्ताप ये विविध विकल्प--३९७
संयमभ्रष्ट गृहवासिजनों की दुर्दशाः विभिन्न दृष्टियों से --४०१
श्रमणजीवन में दृढ़ता के लिये प्रेरणासूत्र--४०५
द्वितीय चूलिका-विविक्तचर्या
प्राथमिक--४०८
चूलिका-प्रारंभप्रतिज्ञा, रचयिता और श्रवणलाभ--४१०
सामान्यजनों से पृथक् चर्या के रूप में विविक्तचर्यानिर्देश --४१०
भिक्षा, विहार और निवास आदि के रूप में एकान्त और पवित्र विविक्तचर्या------------------------४१३
एकान्त आत्मविचारणा के रूप में विविक्तचर्या--४१७
प्रथम परिशिष्ट
दशवैकालिकसूत्र का सूत्रानुक्रम--४२१
द्वितीय परिशिष्ट
कथा, दृष्टान्त, उदाहरण--४३०
तृतीय परिशिष्ट
प्रयुक्त ग्रन्थ-सूची--४४१
अनध्ययकाल--४४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org